

स*

1. स pron. der dritten Person, nur im nom. sg. masc. und fem. erhalten; im Veda noch der loc. **सैस्मिन्** in Verbindung mit **उधन्** RV. 1, 182, 6. 186, 4. 4, 7, 7. 10, 8. 7, 36, 3. **योनौ** 1, 174, 4. **अरुन्** 10, 95, 11. **अग्नि** 1, 52, 15. Vor Consonanten fehlt das Casuszeichen im nom. sg. masc. VS. PAṬ. 3, 15. AV. PAṬ. 2, 57. P. 6, 1, 32. Vop. 2, 55. Ausnahme: **ततः सुधाप सस्तदा** (am Ende eines Ṣloka) HARIV. 11357 (die neuere Ausg. **सो ऽव्ययः**). Das **अ** des nom. स verschmilzt bisweilen mit einem folgenden Vocale RV. PAṬ. 2, 33. fg. VS. PAṬ. 3, 14 (vgl. **सौषधीः** VS. 12, 36. **सेमाम्** 29, 54 und **सैषः** weiter unten). Wenn स mit dem अ priv. verbunden ist, fällt das Casuszeichen nicht ab nach P. 6, 1, 32. Vop. 2, 55. प्रतीयते संप्रति सो ऽव्ययः परैः Çiç. 1, 69. Voc. स, सा P. 7, 2, 106. nach Siddh. K. zu P. 7, 2, 102 ist kein Vocativ vorhanden. Dieser, der (auch zum Artikel abgeschwächt); er, sie: मृगः स मृगयुस्त्वम् AV. 10, 1, 26. यः सूर्यं ज्ञानं स ज्ञानासु इन्द्रः RV. 2, 12, 7. तस्मिन्दशे य आचारः पारंपर्य-क्रमागतः । वर्षानां सात्तरालानां स सदाचार उच्यते M. 2, 18. 168. येन येन — स सः Çiç. 150. यः — स एव VARĀH. BṆH. S. 53, 11. — स नास्ति कश्चित् — यः Spr. (II) 2202. नास्ति लोके स उत्पातो यो ह्यनेन न शा-म्यति VARĀH. BṆH. S. 48, 84. स एव — यः 78, 22. — तथैवासीद्विदर्भेषु भीमः — प्रजाकामः स चाप्रजः MBh. 3, 2076. यथा तदन्यं पुरुषं न सा मंस्यति कर्कचित् 2092. — उत्कर्षः स च धन्विनां यदिषवः सिध्यन्ति लक्ष्ये चले Çiç. 38. स्वरितयोर्मध्ये यत्र नीचं स्यादुदात्तयोर्वान्यतरतो वोदात्तस्वरित-योः स विक्रमः TS. PAṬ. 19, 1. अपि चेन्नानापदस्थमुदात्तमथ चेतसंकितेन स्वर्यते स प्रातिकृतः 20, 3. जिह्वेव लेलि तिमिरनुदे मण्डलं यदि स लेकः VARĀH. BṆH. S. 5, 45. 20, 8. 86, 54. — सो ऽब्रवीदिन्द्रः AIR. Ba. 6, 15. सा कृ सुपपर्युवाच ÇAT. Ba. 3, 6, 2, 4. तं स भीमः प्रजाकामस्तोषयामास MBh. 3, 2078. यत्र राजा स नैषधः 2254. चित्रकूटो रराज सः R. 1, 1, 32. मिथि-लाधिपः स त्वां द्रष्टुमागतः 70, 13. सखी सा खलु कुलपतेरुच्छ्रुसितम् Çiç. 31, 10. स विद्वेषकः KATHĀS. 18, 145. 174. स हि भर्ता समागतः 366. स च मृगः HIT. 17, 15. स मद्गुरुः RAGH. 3, 65. स पतिर्मे गतः क्वापि KATHĀS. 18, 224. स हि ते वर्तते पतिः । युक्ता दिव्येन भोगेन 229. Beliebt ist die

* Was man hier vermisst, suche man unter श oder ष.

Verbindung mit einem Rel. am Anfange eines Satzes: स य एवं शस्ते AIR. Ba. 2, 31. स यो ऽनुदिते बुक्तेति 3, 20. स यदग्निर्घोरस्पर्शः 3, 4. ÇAT. Ba. 3, 5, 2, 23. स यदग्नी बुक्तेति तद्वेषु बुक्तेति 6, 2, 25. स यदि मुचा बु-क्तेति 4, 3. Aus diesem Gebrauch, indem der Satzanfang wie zur festen Formel wurde, entspringt der andere, dass स auch in Fällen bleibt, wo die Construction ein anderes Genus und einen anderen Numerus verlangt, oder wo es vollkommen pleonastisch ist, z. B.: स यदि स्था-वरा प्रापो भवन्ति — ताः ÇAT. Ba. 13, 8, 4, 6. स यस्य कस्य च नामास्ति — तत् 11, 2, 2, 3. स यदि विष्णुक्रमीयमरुः स्यात् 6, 7, 4, 15. स यथा द्वेवम आविलोकाः 11, 2, 2, 2. स यद्येनमासिसङ्गति 1, 6, 2, 15. 4, 5, 2, 1. 10, 7. 11, 1, 2, 12. 12, 6, 2, 2. 13, 3, 6, 6. 14, 4, 2, 29. 5, 2, 23. 4, 10. — Verstärkt durch andere Pronomina der 3ten Person: स एषः AIR. Ba. 2, 25. ÇAT. Ba. 14, 6, 4, 6. Çiç. 5, 11. सैषा AV. 12, 5, 12. सैषः contrahirt KATHĀS. 36, 129. 40, 69. 65, 168. 101, 307. 104, 142. 118, 57. स वा एषः AIR. Ba. 3, 30. एष क्व वै सः ebend. सा तं एषा AV. 2, 29, 7. इयमेव सा 3, 10, 4. अयं स तिष्ठति यतः Çiç. 62. सेयमासादिता बाला MBh. 3, 2697. सो ऽयं वि-द्वेषकः प्रात इति कोलाकूलं व्यधुः KATHĀS. 18, 245. सेयम् MĀK. P. 62, 20. Çiç. 67, 6. स (शापः) चायमङ्गुलीयकदर्शनावसानः 111, 6 (v. l. ohne अयम्). याम् — सेयम् MBh. 3, 2353. Çiç. 84. 89. Spr. (II) 4036. अये से-यमत्रभवती शुकस्तला यैषा Çiç. 106, 15. KATHĀS. 18, 331. स भवान् Çiç. 82, 8. 95, 11. Hinweisend in Verbindung mit der 1ten und 2ten Per-son sg. (mit und ohne अरुम् oder तम्): सा वै वो वरं वृषी ich will mir Etwas von euch ausbitten AIR. Ba. 1, 7. स त्वा (तत्रा ÇAT. Ba. 14, 6, 2, 1) पृच्छामि BṆH. ĀA. Up. 3, 3, 1. MBh. 1, 6115. 3, 2484. fgg. सो ऽह्मास्र-वर्षां क्तिवा पलाशाश्च न्यषेचयम् R. 2, 63, 9. MBh. 1, 5952. 5965. 6142. 6155. 3, 15606. Çiç. 13, 23. RAGH. 1, 5 68 साकं कृता MĀK. P. 70, 5. स एव तस्य धाताकम् KATHĀS. 43, 231. — स वै नो ब्रूहि ÇAT. Ba. 14, 6, 10, 6. 9. 12. 15. 18. 1, 1, 4, 10. स किं शोचसि Spr. (II) 6647. स कर्म कुरु 6646. MBh. 1, 5971. 6172. 3, 15650. 15697. स मे नाथो ह्यनाथस्य भव R. 1, 62, 7. स नास्ति परमित्येव कुरु बुद्धिम् 2, 108, 17. स त्वमातिष्ठ योगम् MBh. 3, 2639. RAGH. 2, 40. 45. 3, 45. Çiç. 53, 21. MĀK. P. 61, 52. 55. तन्मात्रं चेन्मह्यं न ददाति पुरा भवान् । स (du eben derselbe) कथं पृथिवी-